विषय–वस्तु

भूमिका — पृष्ठसंख्या

अध्याय एक– — 7–26

(1) उदात्त–प्रकृति और पाश्चात्य विद्वानों के मतों विशेषकर लौंजाइनस का आलोचनात्मक परीक्षण।

(2) उदात्त का स्वरूप

(क) अन्तरंग तत्व

(I) अनन्त विस्तार

(II) असाधारण शक्ति और वेग

(III) अलौकिक ऐश्वर्य

(IV) उत्तकृष्ट एवं स्थायी प्रभाव–क्षमता

(ख) बहिरंग तत्व

(I) अलंकारों की समुचित योजना

(II) उत्कृष्ट–भाषा

(III) गरिमामय रचना–विधान

(ग) विरोधी तत्व

(I) अभिव्यक्ति में क्षुद्रता

(II) भाव मीमांसा

अध्याय– दो– — 27–44

(1) निराला काव्य का सर्जनात्मक–विकास

(क) अनामिका (प्रथम)

(ख) परिमल

(ग) गीतिका

(घ) अनामिका (द्वितीय)

(ड) तुलसीदास

(च) कुकुरमुत्ता

(छ) अणिमा

(ज) बेला

(झ) नये पत्ते

(ट) आराधना

(ठ) गीत–कुंज

(ड) सान्ध्य–काकली

अध्याय–तीन– 45–171

निराला काव्य का लौंजाइनस के उदात्त–सिद्धान्त के आधार पर आलोचनात्मक परीक्षण।

(1) महान अवधारणाओं की क्षमता

(क) समाजिक यथार्थ विषयक औदात्य।

(ख) प्रकृति के मानवीकरण में कवि का औदात्य।

(ग) सौन्दर्य के माँसल–चित्रण में कवि का औदात्य।

(घ) वैयक्तिक दुःखानुभूति का औदात्य।

(ड) आवेग मूलक भयंकरता का औदात्य

(2) भावावेग की तीव्रता

(क) उज्जवल उदात्त सांस्कृतिक आवेग

(ख) नव जागृति का आह्वान

(ग) पुरूषत्व का समावेश

(घ) क्रान्ति का मानवीकरण

(ड़) कवि का विरोधी स्वर।

(च) अतीत की स्मृति ।

(छ) युद्धोन्माद का चित्र।

(ज) भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण।

(3) समुचित अलंकार योजना

(क)अनुप्रास।

(ख) सम्बोधन।

(ग) पुर्नरूक्ति प्रकाश।

(घ) प्रश्नालंकार।

(ड) विरोधाभास

(च)रूपक।

(छ)– मानवीकरण।

(4) उत्कृष्ट भाषा–प्रयोग

(क) निराला काव्य में ओज की प्रवाह–पूर्णता।

(ख) निराला काव्य में रूपक–योजना।

(ग) उपमाओं एवं अति–युक्तियों का उचित–प्रयोग।

(5) गरिमामय रचना–विधान

(क) निराला का बिम्बगत् वैशिष्ट्य।

(ख) निराला की छन्दगत् मौलिकता।

(ग) प्रकृति का मानवीकरण।

(ड) अतीत का वर्तमान से सामंजस्य।

अध्याय–चार– 172–179

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची – 180–183